स्वर्णमान
स्वर्णमान की विशेषताए
स्वर्णमान के विभिन्न रूप
स्वर्णमान के गुण
स्वर्ण मान के दोष
स्वर्णमान के पतन के कारण

Dr.Vivek Mishra
SRAP College
Bara Chakia

- स्वर्णमान एक धातु का सबसे प्रमुख रूप है
- स्वर्णमान के अंतर्गत प्रमाप मुद्रा स्वर्ण की एक निश्चित मात्र के बराबर होती है
- “एक ऐसी मुद्रा प्रणाली जिसमे मानक आकर के सोने के सिक्के अथवा स्वर्णपत्र प्रचाल में होते हैं” हैबरलर

विशेषताएं

1. स्वर्ण मुद्रमान प्रणाली में सोने के सिक्के का वास्तव में प्रयोग होता है |
2. स्वर्ण मुद्रा असीमित विधिग्राह्य होती है |
3. स्वर्ण की खुली सिक्का धलाई होती है |
4. स्वर्ण के आयात निर्यात पर प्रतिबन्ध नहीं होता है |

स्वर्णमान के प्रमुख रूप से दो रूप है -

- प्रत्यक्ष स्वर्णमान (Direct gold standard)

- परोक्ष स्वर्णमान (Indirect gold standard)

- इसके तीन रूप होते हैं ---

1. स्वर्ण पटमान
2. स्वर्ण विनिमय मान
3. स्वर्ण निधि मान

स्वर्ण मुद्रामान के गुण एवं दोष

- इसमें जनता का पूर्ण विश्वास होता है|
- स्वर्ण मुद्रामान सबसे सरल रूप है |
- स्वर्ण मुद्रामान का सबसे प्रमुख गुण उसकी स्वतः संचालकता (Automaticity)|
- स्वतः संचालकता गुण के कारण विदेशी विनिमय दर में स्थिरता बनी रहेगी |

- दोष

1. इसमें लोच का अभाव रहता है |
2. घिसावट का गुण रहता है |
3. बहुमूल्य धातु की उपयोगिता निष्क्रिय पड़ी रहती है|
4. धनी देश इससे ज्यादा लाभान्वित होते हैं |

पतन के कारण

- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एक-एक करके सभी देशों ने स्वर्णमान का परित्याग कर दिया|

स्वर्णमान के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे ------

1. स्वर्णमान के नियमों का उल्लंघन
2. स्वर्ण का विश्व के देशों में असमान वितरण
3. क्षतिपूरक भुगतान की स्वर्ण में अदायगी पर बल
4. संरक्षणात्मक नीति तथा राष्ट्रवाद का उदय
5. तीसा की भयानक विश्व मंदी
6. स्वर्ण मुद्रा मान का परित्याग
7. राजनैतिक उथल-पुथल
8. सोने के आयात-निर्यात पर प्रतिबन्ध

XXXXXXX